ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 दिसम्बर 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-१२१, वर्ष-१३
मार्गशीर्ष विक्रमी २०७६ (दिसम्बर 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्य इव स्व ओक्ये ॥ –ऋ०१। ६। २१। ३

व्याख्यान–हे (सोम) सोम्य सौख्यप्रदेश्वर! आप कृपा करके (रारन्धि नो हृदि) हमारे हृदय में यथावत् रमण करो। दृष्टान्त–जैसे सूर्य की किरण, विद्वानों का मन और गाय पशु अपने-अपने विषय और घासादि में रमण करते हैं।* वा जैसे (मर्यइव स्वे ओक्ये) मनुष्य अपने घर में रमण करता है, वैसे ही आप सदा स्वप्रकाशयुक्त हमारे हृदय (आत्मा) में रमण कीजिए। जिससे हमको यथार्थ सर्व ज्ञान और आनन्द हो।

सम्पादकीय

॥ आततायी को शीघ्र मारना चाहिए ॥

सृष्टि के आदि काल से हमारे इस देश में नारी का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। वेद, उपनिषद, शास्त्रों एवं दर्शनों से लेकर स्मृति ग्रन्थों तक में नारी की महिमा विशिष्ट रूप से बतलायी गई है। परस्त्री को कामदृष्टि से देखने, विचारने तक को महापापों में गिना गया है। बलात् स्त्री पर आक्रमण, उसको अपने वश में करने का प्रयास और बलात्कार को अत्यंत नीच कर्म मानकर इसके लिए कठोर दण्ड देने का प्रावधान धर्मशास्त्र में उपलब्ध है- **'आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारतः'** अर्थात् आततायी का विचार किए बिना ही वध का विधान किया गया है।

किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण यह होता ही जा रहा है कि हमारे इस गौरवशाली देश में म्लेच्छों के आगमन के उपरांत सबसे अधिक उत्पीड़ित यदि निरीह पशु-पक्षियों के उपरांत कोई हुआ है तो वह नारी है। नारी शरीर के साथ किए गए दुराचार, दुर्व्यवहार को जितना वीभत्सता के साथ अंजाम दिया गया और अभी भी दिया जा रहा है, वह अकल्पनीय, असहनीय तो है ही, अपितु प्रत्याक्रमणीय (विघात करने योग्य) भी है। न जाने म्लेच्छों (मुस्लिम, ईसाई आदि मजहबियों) ने यह कपोल कल्पना कहां से कर ली कि- औरत में रुह (आत्मा) नहीं होती और इस दुष्टविचार के परिणामस्वरूप ही जब ये म्लेच्छ नारी को असहाय, अकेला और निर्बल पाते हैं तब अपने पूर्वजों की पैशाचिक क्रूरता के पिछले सारे कुकर्मों को पीछे छोड़कर और अधिक राक्षसी कृत्य करने पर उतारू हो जाते हैं। तब अपने-अपने समय के सभ्य जन त्राहि-त्राहि करते हुए पूछते हैं कि इन पिशाचों का हल क्या है? कैसे इनसे पीछा छूटे? कैसे निजात मिले?

बन्धुओं ! भगिनियों ! मैंने जब से इन पैशाचिक क्रूरतापूर्ण कृत्यों का समाधान करने के बारे में विचार करना प्रारंभ किया है, तब से तीन स्तर के समाधान पर आकर विचार स्थिर सा हो रहा है- एक

१- हमारी सरकारों में यदि कुछ भी मानवता एवं सभ्य समाज और देश बनाने के भाव बचे हैं तो सबसे पहला कर्तव्य माता-पिता का निर्धारित किया जाय कि वे अपनी संतानों को सुसंस्कारित बनावें, जो माता-पिता संस्कार देने में सक्षम न हों उनकी संतानों हेतु सरकार संस्कार केन्द्र चलावे (आंगनबाड़ियों की जगह) अर्थात् बिना संस्कार के कोई बालक-बालिका न रहे। जिस बालक-बालिका पर संस्कार का उचित प्रभाव न हो उसकी सूचना सरकार के सुधार तन्त्र (थाने आदि) में माता-पिता अथवा संस्कारदाता दें।

२- विद्यालयों में रोजगारपरक शिक्षा से अधिक मानवीय जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा की व्यवस्था की जाए, शिक्षा संस्थान चाहे सरकारी हो या निजी (प्राइवेट), जो बालक-बालिकाओं की प्रवृत्ति मानवीय सार्वभौमिक (यूनिवर्सल) जीवन मूल्यों की ओर न होकर क्रूर, आपराधिक कर्मों की ओर तनिक भी दिखाई दे उनकी गोपनीय सूचना सुधार तन्त्र (थाने आदि) में विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिका आदि प्रेषित करें।

३- दण्डनीति अर्थात् जो बालक-बालिका संस्कारों को भी तिरोहित करते हों, मानवीय सार्वभौमिक जीवनमूल्यों को भी नहीं मानते हों, उदण्ड, दुराचारी, अवांछित, अनैतिक जीवन जीने में ही विश्वास करते हों, जिनकी नकारात्मक गोपनीय जानकारी माता-पिता, अध्यापकों आदि के द्वारा सुधार तंत्र को प्राप्त हो चुकी हो, उनकी कठोर निगरानी करते हुए सुधार तंत्र उनकी सभी गतिविधियों को अपनी दृष्टि (सर्विलांस पर) में रखे और किसी जघन्य अपराध की ओर वे बढ़ें उससे पहले ही पकड़ कर

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

सुधार करें। यदि परिवर्तन हो तो बहुत सुन्दर और यदि न हो तो अपराधी को कठोर से कठोर और शीघ्र से शीघ्र दारुण दु:खदायक दण्ड देंवे।

यदि घर पर संस्कार, विद्यालयों में सुशिक्षा और दोनों को न मानने पर कठोर दण्ड व्यवस्था का समुचित प्रबंध हमारे देश की सत्तालोलुप सरकारें कर सकें तो मुझे लगता है कि यह जो घिनोनी पैशाचिक क्रूरतापूर्ण बलात्कार, अकारण हत्या और अपहरणादि महापाप हो रहे हैं, यह सब शीघ्र ही न्यायपूर्वक नियन्त्रित किए जा सकते हैं। अन्यथा **'परमवैभव'** पर राष्ट्र को ले जाने की प्रार्थना मात्र एक कर्मकाण्ड बनकर रह जाएगी और हमारी अस्मिता एवं गरिमा लुटती-पिटती रहेगी। वह कभी निर्भया के भयाक्रांत रूप में सामने आएगी, कभी ट्विंकल शर्मा, कभी प्रीति माथुर, कभी पन्ना, मध्य प्रदेश की मासूम बच्ची तो कभी दिशा की प्रतिमूर्ति बनकर हमारे सभ्य समाज और गौरव पूर्ण राष्ट्र को धिक्कारने के लिए विवश करती हुई दिखाई देंगी।

आखिर क्या दोष था उस दिशा का? यही न कि वह अकेले ही अपने कर्तव्य कर्म को पूरा कर अपने घर लौट रही थी, बस। और इसकी इतनी भयानक सजा कि सामुहिक बलात्कार और फिर पेट्रोल डालकर जला डालना? आग फैल रही है, यह अव्यवस्था, अराजकता, आतंक और आततायीपने की आग हमारे अपने घरों को जलाए उससे पहले ही जागना होगा, एक हजार साल से सोने वालों को, मात्र सोशियल मीडिया पर सहानुभूति का लाइक या शेयर करने वालों को या आंखों से संवेदना के अश्रु छलकाने वालों को अवश्य जगाना होगा। जगाना होगा हमारी इन अन्धी-बहरी सरकारों को, कानून के रखवालों को और दुर्दान्त अपराधियों के लिए फरिस्ता बनकर आने वाले तथाकथित मानवाधिकारवादियों को। अरे अधिकार मानवों के होने चाहिए, हम भी मानवाधिकार के प्रबल समर्थक हैं, किन्तु जो मानवता को छोड़कर निर्दोष मानवों को ही त्राहि-त्राहि करने को विवश कर देता हो वह न तो मानव है और न ही उसके कोई अधिकार ही हो सकते हैं। वह तो दानव है, पापी है और अपराधी है। उनका तो एक ही अधिकार होना चाहिए... मात्र दण्ड और कठोर दण्ड।

संस्कार कहाँ से सीखें ?

– आचार्य सतीश, दिल्ली

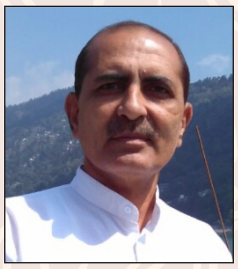

कहते हैं संस्कार गर्भकाल से ही शुरू हो जाते हैं। पूरा का पूरा अध्ययन काल तो है ही संस्कार लेने के लिए। शिक्षा की पूर्णता बिना संस्कारों के नहीं होती है। विद्या देने के स्थान परिवार, माता-पिता, सम्बंधी, मित्र मंडली सभी का बालकों को संस्कारित करने में योगदान होता है। इसमें भी सबसे अधिक योगदान तो विद्यालय व परिवार का ही होता है। क्या आज हमारे समाज में यह दोनों संस्थाएं बालकों को संस्कारित करने का कार्य कर रही हैं। एक बात और यह भी विचारणीय है कि समाज के कुछ बालकों को संस्कारित करने से काम चल जाता है या समाज का प्रत्येक बालक संस्कारित होना चाहिए।

जिस प्रकार संक्रामक रोग से रक्षा तभी हो पाती है जब प्रत्येक उस से मुक्त हो अन्यथा तो एक भी बालक छूटा और सुरक्षा चक्र टूटा। इसी प्रकार समाज के प्रत्येक बालक का संस्कारित होना आवश्यक है अन्यथा एक भी संस्कारविहीन बालक युवक होकर अन्य अनेकों को तो संस्कारविहीन बनाता ही है उन्हीं के साथ मिलकर जघन्य अपराध भी करता है। इसलिए परिवार व विद्यालयों को संस्कारशालाओं का रूप देना आवश्यक है जिससे समाज का प्रत्येक बालक संस्कारयुक्त हो सके। आज हत्या, बलात्कार, चोरी, डकैती, ठगी आदि अपराध संस्कारहीनता के कारण ही होते हैं। आज के समाज में इनका अन्य कोई कारण नहीं है। यह सब बढ़ता ही जा रहा है चाहे अपने आप को विकसित राष्ट्र बना लें चाहे जितना विकास कर लें, इन सब का मूल कारण शिक्षा में संस्कारों का नहीं होना है। कई पीढ़ियों से संस्कारहीन शिक्षा जो केवल अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा करने का माध्यम रही है या अधिक से अधिक थोड़ा बहुत जीविका अर्जित करने का माध्यम है। जब पीढ़ी दर पीढ़ी संस्कार गायब हुये तो परिवार भी केवल पालन-पोषण का माध्यम बन गये, संस्कार देने वाला रहा ही नहीं।

आइए अब इन दोनों का थोड़ा सा विश्लेषण कर लेते हैं की क्या स्थिति है? परिवारों को देखो तो वहां बालकों को उच्च से उच्च शिक्षा दिलाने का तो प्रयास किया जाता है लेकिन उन्हें कहीं से भी संस्कार दिलाने का प्रयास नहीं किया जाता है और न ही उसके लिए समय दिया जाता है, माता पिता के पास समय ही नहीं है। दूसरी और गरीब लोगों को रोजी-रोटी कमाने से फुर्सत ही नहीं और जो अपने आप को आधुनिक समझते हैं वह संस्कार देने की बात को पिछड़ापन समझते हैं। कहते हैं पढ़ लेने दो यह सब करने को सारा जीवन पड़ा है। फिर बालकों को संस्कार कैसे मिलें? गरीबों के घरों के आसपास का वातावरण दूषित व संस्कारहीन है शहरों में तो विशेषकर। जिनके पास थोड़ा सा पैसा है वहां बालकों को सारे साधन उपलब्ध हैं उन्हें संस्कारविहीन करने को।

विद्यालयों की स्थिति यह है कि या तो शुष्क विषयों की शिक्षा देने मात्र पर जोर दिया जाता है या फिर मनोरंजन के नाम पर अश्लील गीत तक विद्यालयों के समारोह में बजते रहते हैं। विद्यालय में वार्षिक समारोह हो या उच्च कक्षा का विदाई समारोह सबमें सस्ता मनोरंजन ही मुख्य लक्ष्य होता है और छात्र-छात्राएं संस्कारों का मजाक उड़ाते पाए जाते हैं। जहां शिक्षा प्रणाली में यह सिखाया जाता था कि सम आयु की कन्या हमारी बहन है वहां अब हर लड़की को दोस्त फ्रेंड की नजर से छात्र देखते हैं और ऐसा ही उन्हें शिक्षा दी जाती है।

कुछ लोग अवश्य संस्कार देने का प्रयास करते हैं लेकिन एक तो गिनती में थोड़े, दूसरा वातावरण विपरीत हो तो तभी प्रभाव पड़ता है जब सब प्रयास करते हैं। तो बालकों की संस्कारशालाएं समाप्त हुई और समाज में हिंसा, व्यभिचार, ठगी, चोरी आदि का फैलाव हुआ। संस्कार हीन बालक किशोरावस्था व युवावस्था में अत्यंत घातक होते हैं और बड़े होने पर अपने से छोटों के प्रेरणा स्रोत बनते हैं। एक चक्र चल पड़ता है।

समाज में कोई भी आयोजन हो चाहे सरकारी, निजी, धार्मिक या सामाजिक सब में मुख्य जोर केवल मनोरंजन होता है। यदि घटिया मनोरंजन नहीं है तो उस कार्यक्रम का कोई महत्व ही नहीं है और उसे नीरस कहकर नकार दिया जाता है। चाहे विवाह समारोह हो,जागरण हो, सांस्कृतिक कार्यक्रम हो और यह कार्यक्रम चाहे किसी के द्वारा आयोजित हो सब जगह यही मिलता है। ऐसी परिस्थिति में भावी पीढ़ी को संस्कार कहां से मिलें।

इन्हीं विकट परिस्थितियों में भी कुछ लोग अवश्य प्रयास करते हैं। आर्य महासंघ के कई अनुषांगिक संगठन पूरे समाज को संस्कारित बनाने का प्रयास निरंतर कर रहे हैं। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा जहां व्यस्क स्त्री पुरुषों को संस्कारित करने का कार्य कर रही है उन्हें विद्या से ओतप्रोत करके, वहीं आर्य छात्र सभा लाखों छात्रों तक पहुंच रही है अपनी संस्कारशाला लेकर। परिवारों को संस्कारित करने का कार्य भी आर्य संरक्षिणी सभा द्वारा किया जा रहा है व आर्य क्षत्रिय सभा विशेषकर युवाओं के लिए इसी कार्य में संलग्न है। आइए हम सब मिलकर राष्ट्र को संस्कारित करें और सुखी सभ्य व भयमुक्त समाज का निर्माण करें। सभी का सहयोग इसमें अपेक्षित है।

संध्या काल

पौष-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(13 दिसम्बर 2019 से 10 जनवरी 2020)
प्रात: काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 P.M.)

माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(11 जनवरी 2019 से 9 फरवरी 2020)
प्रात: काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

आर्य लाजपत राय बने पंजाब केसरी

- आचार्य अशोकपाल, प्रवक्ता, आर्य महासंघ

सज्जनों! युवाओं! आर्यो! राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा पिछले डेढ़ दशक से आर्यकरण को बढ़ा रही है। आज आर्यकरण अर्थात् आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माण अभियान एक आंदोलन का रूप ले चुका है जो आर्य समाज की सीमाओं से परे ईसाई-मुस्लिम-पारसी समुदाय को भी प्रभावित कर रहा है। आर्य समाज का तो हर वर्ग 'आर्य निर्माण-राष्ट्र निर्माण' अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा करता हुआ नहीं थकता। हो सकता है नीतिगत विषयों की समझ न होने के कारण भले ही कोई आर्यवीरों, आर्य निर्माताओं की निंदा करे, पर हृदय से प्रत्येक आर्य-आर्या आज इस वृहद राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ खड़ा है, सहयोग कर रहा है, आर्य प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन युद्ध स्तर पर करवा रहा है क्योंकि वह जानता है कि म्लेच्छों के शुद्धिकरण का, उनकी घर वापसी का यही एकमात्र कारगर उपाय है। आतंकवाद ड्रग्स के नशे से भी भयावह है, जो किसी भी सभ्यता, संस्कृति को मटियामेट कर देता है, पर आज इसका इलाज आर्य महासंघ के तत्वावधान में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा ने खोज निकाला है। वह है आर्यकरण। हिन्दुओं का आर्यकरण, मुसलमानों का आर्यकरण, ईसाईयों का आर्यकरण, प्रत्येक सम्प्रदाय का आर्यकरण और जब सभी का आर्यकरण हो जाता है तो आतंक, डर, भय, शंका नहीं अपितु श्रद्धा, प्रेम, विश्वास और सुख-शांति का वास होता है। अत: आर्यकरण ही विश्वशान्ति की रामबाण औषधि है, जिसे अमेरिका, यूरोप, चीन, आस्ट्रेलिया, अरब, पश्चिमी एशिया सब खोज रहे हैं।

हमें आर्यकरण संजीवनी का उत्पादन बढ़ाना होगा, विश्व की जनसंख्या आज आठ अरब को पार कर रही है। परमाणु युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। पाकिस्तान का प्रधानमंत्री आतंकियों की शय पर संयुक्त राष्ट्र के मंच पर दुनिया को परमाणु युद्ध की धमकी दे रहा है वही उईगर में स्वयं आतंक को ड्रग्स से भी खतरनाक बताने वाला चीन पाकिस्तान का समर्थन कर रहा है, तुर्की तो इन्तजार कर ही रहा है। इस प्रकार चीन-पाकिस्तान -तुर्की की तिकड़ी संसार को तीसरे विश्वयुद्ध की ओर धकेल रही है। चीन विश्व युद्ध के बाद अपने सैनिक सामर्थ्य के बल पर इस्लामिक आतंकवाद को कुचलने का विचार कर रहा है, यह उसकी भयानक भूल साबित होगी। समाधान केवल आर्यकरण है। आइये देखते हैं कैसे?

बात लगभग 150 वर्ष पुरानी होगी। एक युवक अपनी धर्मपत्नी के साथ मस्जिद की सीढ़ियों पर चढ़ा जा रहा था, जो छोटे बालक को गोद में लिये थी। वे जैसे-जैसे सीढ़ियां चढ़ रहे थे माँ छोटे बालक को चोंटी भर देती और वह रोने लगता। माँ कहती कि देखिये बालक रो रहा है, मेरा मन नहीं मानता। वास्तव में आज पूरा परिवार इस्लाम को अंगीकार करने जा रहा था। युवक कोई ओर नहीं बालक लाजपत के पिता मुंशी राधाकृष्ण आजाद थे, जिनके मन पर इस्लाम ही शांति पथ है, सुख का मार्ग है छाया हुआ था, उन पर मौलवियों की तकरीरों का असर था जो बालक के रोने से टूट रहा था और माता गुलाब देवी थी कि पति को विधर्मी होने से बचाना चाहती थी। ऐसे में बालक लाजपत माता का अन्तिम सहारा था। बालक रोता रहा, पिता पर असर होता रहा। माँ लाजपत को लेकर सीढ़ियों पर ही बैठ गई और तब तक न उठी जब तक मुंशी जी ने इस्लाम ग्रहण करने की अपनी जिद न छोड़ी और इस प्रकार एक परिवार का इस्लामीकरण होने से बच गया।

बालक किशोर हुआ गवर्मेन्ट कॉलेज, लाहौर में दाखिल हुआ तो लाला साँईदास मिल गये, जो नित्य कॉलेज के हॉस्टल में आया करते और आर्य सभ्यता-संस्कृति पर विचार-विमर्श, चर्चा करते। धन्य हैं ऐसे-ऐसे आर्यसमाजों के प्रधान! पर आजकल ऐसे प्रधान जी कहाँ हैं? 90 साल का बूढ़ा बाबा लोकैषणा में प्रधान बना बैठा है। खैर! वो दिन भी आया जब युवा लाजपत आर्यसमाज की दहलीज पर पहुँचा और पहुंचते ही लाला साईदास ने सीने से लगा लिया। प्रधान जी ने तुरन्त प्रभाव से युवा लाजपत को आर्य समाज का सदस्य बनाया और अपना उद्बोधन देने का आग्रह किया। एक और युवा उद्बोधन दे रहा था, वहीं वह भाव-विभोर हो आर्य बनता जा रहा था। यह भी आर्यकरण की एक परम्परा है जो आर्य समाजों के पदाधिकारियों को आनी ही चाहिये अन्यथा देखने में आता है कि साप्ताहिक कार्यक्रमों में प्रारम्भ से अन्त तक माइक या तो पुरोहित के कब्जे में रहता है अथवा आपस में भजन-भजन खेलते रहते हैं! नव आगन्तुकों को लाला जी वाला प्रेम, वात्सल्य कहाँ मिलता है?

जब वे रोहतक पहुंचे तो उन्हें आर्यसमाज रोहतक का सचिव बनाया गया, जब हिसार में उन्होनें वकालत शुरु की तो स्वयं ही चलता-फिरता आर्यसमाज बन गये। समाज के हर वर्ग का आर्यकरण ही उनका एक मात्र ध्येय था। छ: वर्ष उन्होंने घनघोर पुरुषार्थ किया। आज जितना आर्यसमाज हरियाणा में दिखाई पड़ता है, आधिकांश लाला लाजपत राय द्वारा पोषित है। इसी समय वे हिसार म्यूनिसिपल कमेटी के सदस्य भी बने थे और अपने भीतर बढ़ रहे आर्यत्व को प्रदर्शित भी कर रहे थे जब परम्परा के विरूद्ध गवर्नर का स्वागत अंग्रेजी की बजाये उर्दू में किया था।

स्वाध्याय बढ़ता रहा तो आर्यत्व उछाले मारना ही था, हुआ भ वही 1898 में लाला जी ने वकालत छोड़ स्वयं को राष्ट्रार्पित कर दिया। अकाल के समय ईसाई मिशानरियों का मुकाबला करते हुवे-अनार्यों हेतु अनाथालय खुलवाये और आह्वान किया कि जो देश अपने अनार्यों को सहारा नहीं दे सकता, उसे किसी से सहयोग की उम्मीद नहीं करनी चाहिये। हमें बालकों के लिये दूध, बड़ों के लिये भोजन, सबके लिये शिक्षा सुनिश्चित करनी ही होगी। इसीलिये नेशनल कालेज, लाहौर, डी.एम कालेज हिसार, डी.ए.वी. कॉलेज आदि अनेक विद्यालय, महाविद्यालय, अनाथालय खुलवाये। जब कांगडा में भूकम्प आया, फिर सेवा में जुट गये और देश के लिये सार्वकालिक कार्य करने वाले युवाओं के योगक्षेम हेतु लोकसेवा मण्डल बनाया। जो कि सार्वदेशिक सभायें, प्रतिनिधि सभायें आज नहीं कर पा रही। बैंकिग में सुधार हेतु पंजाब नेशनल बैंक खोला, लक्ष्मी इन्शोरेंश कम्पनी बनवाई। फिर आन्दोलन शुरु 1905 से 1907 और देश की महान त्रिमूर्ति लाल-बाल-पाल के लाल बन गये लाला लाजपत राय। उन्हें मांडले (बर्मा) जेल भेजा गया। यह पहला अवसर था। 1857 में बहादुरशाह जफर के देश निकाला के ठीक 50 वर्ष बाद 1907 में लाल लाजपत को देश निकाला दिया गया। बहादुरशाह जफर को भी (रंगून) बर्मा ही भेजा गया था। इससे लाला लाजपत राय की तात्कालिक हैसियत परिलक्षित शेष अगले पृष्ट में ...

पिछले पृष्ठ का शेष...

होती है। बहादुरशाह जफर मर गया वापिस न लौट पाया पर लाला जी तो आर्य जी ठहरे वापिस पहुंचे और फिर संघर्ष शुरु क्योंकि वे जानते थे कि आर्यों का तो जन्म ही संघर्ष के लिये होता है। उन्होंने संघर्षरत रहे आर्यों पर कलम चलाना प्रारम्भ कर दिया जैसे श्री राम, श्री कृष्ण, शिवाजी आदि। आर्य पूर्वजों की जीवनी पढ़ कर जनता में जागरण तो होना ही था। सो हुआ। लाला जी ने अधिक से अधिक युवाओं को सेना में भर्ती होने का आह्वान किया। पंजाब से सेना में भर्ती होने वाले युवाओं की बाढ़ सी आ गई। प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1919 शुरु हो चुका था। लाला जी अमेरिका पहुँचे और अमेरिका में लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, अजीत सिंह के साथ मिलकर स्वतंत्रता सेनानियों का मार्गदर्शन किया और 1917 में इण्डियन होम रूल लीग, अमेरिका की स्थापना की। वहाँ उन्होनें आर्य समाज, हिन्दू की नजर मे अमेरिका, अंग्रेजों पर भारत का ऋण नामक अनेक पुस्तकें लिखी जो बहुत प्रसिद्ध हुई। अब वे विश्व प्रसिद्ध नेता बन चुके थे। 1919 में जलियां वाला कांड से आहत हो वे पंजाब वापिस लौटे और स्थानीय संघर्ष पर जोर देने लगे। 1921 असहयोग आन्दोलन में उन्होंने सारे पंजाब को झोंक दिया। अंग्रेजो की चूलें हिलने लगी, पर गांधी के निर्णय से उन्हें बहुत झटका लगा और उन्होंने क्रान्तिकारियो का मार्गदर्शन करना स्वीकार कर लिया। नेशनल कॉलेज लाहौर में भाई परमानन्द के साथ मिलकर युवाओं की टुकड़ी तैयार की, उन्हें कानपुर भेजते रहे, पत्र-कारिता सिखाते रहे। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया, जिसमें सम्मिलित होने के लिये किसी भारतीय को योग्य नहीं समझा गया तो पंजाब केसरी दहाड़ उठा और लाहौर में 30 अक्टूबर 1928 को युवाओं भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि को साथ लेकर विरोध प्रदर्शन किया। जुलुस जब आगे बढ़ रहा था तो स्कॉट के नेतृत्व में सांडर्स ने पंजाब केसरी को घेरकर पुलिस को लाठियां बजाने का आदेश दे दिया। जिस प्रकार कौरवों ने अभिमन्यु को चक्रव्यूह में घेरकर हताहत किया था और पांडव उस तक पहुंच नहीं पाये। ठीक वैसे ही लाला लाजपत राय तक भगत सिंह एवं अन्यसाथी पहुंच नहीं पाये और पुलिस ने उन्हें लहू-लुहान कर दिया, हड्डी-पसली तोड़ दी और तब तक लाठियां बरसाई गई जब तक कि वे बेसुध न हो गये। डॉक्टर इलाज करते रहे, पंजाब केसरी जीवन-मरण के चक्र से जूझते हुये भी सिंह गर्जना कर रहे थे कि मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेजी साम्राज्य के ताबूत की अन्तिम कील साबित होगी।

पंजाब केसरी के शावक क्रान्तिकारी सब सुन रहे थे कि 17 नवम्बर 1928 को पंजाब केसरी देह त्याग कर नव-संसार के लिये कूच कर गया। हिन्दुस्तान सेवा रिपब्लिक आर्मी ने तुरन्त योजना बनाई और क्रियान्वित कर दिया और चिता की आग ठण्डी होने से पूर्व ही अपने आर्य पिता, पंजाब केसरी, शेरे-ए-पंजाब लाला लाजपता राय की नृशसं निर्मम हत्या का बदला 17 दिसम्बर 1928 को सांडर्स वध करके लिया। यह ऐसे ही था जैसे राम-लक्ष्मण ने ताड़का वध किया हो। इसका प्रभाव इतना हुआ कि भगतसिंह राष्ट्रीय नेतृत्व के समकक्ष पहुंच गये। गांधी को खतरा अनुभव होने लगा। युवाओं ने गांधी के दोगलेपन को उजागर करने के लिये असेम्बली में बम फैंका कि भारतीयों के हितों का ख्याल नहीं रखा गया तो सावधान रहना। अग्रेंजों की नींद हराम हो चुकी थी, जिन्ना, नेहरू, सुभाष सभी भगत सिंह का समर्थन कर रहे थे, वह भारतियों के हृदय सम्राट बन चुके थे। माता विद्यावती की तपस्या, यज्ञ, संध्या, सत्संग का प्रतिफल मिल रहा था। अंग्रेजों ने हड़बड़ाहट में 23 मार्च 1931 को सांडर्स वध एवं महारानी के विरूद्ध षड्यन्त्र करने के आरोप में भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को सूली पर लटका दिया और अधजली लाशों को नदी में बहा दिया। देश में आक्रोश फैला, युवाओं ने युद्ध कला सीखने को सेना में भर्ती होना जारी रखा। दूसरे विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में अवश्य थे, पर वे भारत के लिये लड़ रहे थे। इसे भांप कर सुभाष चन्द्र बोस, नेताजी ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया, सभी आर्य शावक इसमें सम्मिलित हो गये। इधर आर्य समाजियों ने भारत छोड़ो आन्दोलन को अपने हाथ में ले लिया। सेनाओं ने अंग्रेजों का आदेश मानने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजों को बाधित होकर भारत छोड़ना पड़ा, पर उन्होंने सुनिश्चित किया कि भारत लाला जी के शावकों के हाथ में न पड़े। और वही हुआ। प्रतिफल देश के टुकड़े हो गये। भेड़ियों ने देश नोंच खाया। पंजाब केसरी का लाहौर अब भारत में नहीं रहा। पर पंजाब केसरी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। हम पंजाब केसरी के शावक आर्यगण कार्य कर रहे हैं, आर्यग्राम आर्यनगर, आर्य समाज बनायेंगे और देश को भारत से आर्यावर्त, हिन्दोस्तान से आर्यावर्त, इण्डिया से आर्यावर्त बनाकर ही दम लेंगे, जिससे सम्पूर्ण मानवता को आंतक, पाखण्ड, लूट, शोषण से बचाया जा सके। हे ईश्वर! हमें आर्य पूर्वजों का अनुसरण कर्ता बना। हमें पंजाब केसरी, भारत केसरी, विश्व केसरी बना।

आज का प्रश्न

- आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

प्रश्न :- संयम और भोग में तुलना करें तो अधिक सुख संयम में है या भोग में है ?

उत्तर :- वास्तव में संयम और भोग की तुलना वही व्यक्ति कर सकता है जिसने संयम और भोग दोनों के सुख को प्राप्त किया हो।

भोग के सुख तो साधारण से साधारण व्यक्ति भी ले सकता है और ले भी रहे हैं परंतु सयम का सुख कोई विरला ही ले पाता है और वही दोनों के सुख का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है।

संयम कभी बलात् नहीं होता, सहज होता है। बलात् किया गया संयम सुख नहीं दे पाता। सहज संयम के लिए अंतर्मुखी होना आवश्यक है। व्यक्ति शरीर, वाणी एवं मन की चेष्टा के बाहरी विषयों से हटकर अंतः वृत्तिक हो जाता है। तब उसे ईश्वर से सुख मिलने लगता है।

यदि व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो इंद्रियां विषयों में बलात् घसीट कर ले जाती हैं। ऐसी स्थिति में यदि मन इंद्रियों के साथ लग जाए तो भोग की स्थिति पैदा हो जाती है जो सुख तो देती है, परंतु परिणाम में व्यक्ति सामर्थ्यहीनता की हानि उठा लेता है। शक्ति हीनता हमारे हर क्षेत्र में दुख का कारण बनती है।

इसमें एक विज्ञान और है यदि इंद्रियां बिना मन के बलात जा रही हो तो वह स्थिति भोग में नहीं आती। वही समय है मन को ईश्वर में लगा लेने का क्योंकि इंद्रियों के पीछे पीछे मन भी दौड़ लेता है।

किसी सुंदर वस्तु को देखकर भोग और संयम दो प्रकार के विचार उभर सकते हैं। वह हमारे ज्ञान पर है हम अधिकतर भोग का विचार उठा लेते हैं, उस सुंदर वस्तु के साथ, ईश्वर को जोड़कर विचारना अर्थात् किसी ना किसी रूप में हर कृति का संबंध ईश्वर से है यह विचार हमारे मन को संयम में परिणत कर देता है।जो हमारे सुख की स्थिति लगातार बनाएं रखता है।

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

पचास रुपये लेके चला। मार्ग में **नौकर**-कुछ मुझको भी दे। **स्वार्थी**-अच्छा भाई, तू भी एक रुपया ले ले। **नौकर**-लाओ। जब दरवाजे पर आया, तब सिपाहियों ने रोका। कौन? तुम क्या ले-जाते हो? **नौकर**-मैं दानाभक्ष का नौकर हूँ। **सिपाही**-यह कौन है? **नौकर**-जपानुष्ठानी। **सिपाही**-कुछ मिला? **नौकर**-यही जाने। **सिपाही**- कहो भाई! क्या मिला? **स्वार्थी**-जितना तुम लोगों से बचकर घर पहुँचे सो ही मिला। **सिपाही**-हमको भी कुछ देता जा। **स्वार्थी**-लो आठ आने। **सिपाही**-लाओ।

जब तक दानाध्यक्ष घबराया कि वह भाग तो नहीं गया? दूसरे नौकर से बौला कि देखो वह कहां गया? तब तक वह स्वार्थी आदि आ पहुँचे! **दानाध्यक्ष**-लाओ, रुपये कहाँ है? **स्वार्थी**-ये हैं अड़तालीस। **दानाध्यक्ष**-वाह वाह बारह रुपये कहाँ गये? स्वार्थी ने जैसा हुआ था, वैसा कह दिया। **दानाध्यक्ष**-अच्छा तो चार मेरे गये और आठ तेरे। **स्वार्थी**-अच्छा, जैसी आप की इच्छा हो। तब छब्बीस लिए दानाध्यक्ष ने। और बाईस स्वार्थी ने लेके कहा कि-'मैं घर हो आऊँ, कल आ जाऊँगा।'

वह दूसरे दिन आया। उससे दानाभक्ष ने कहा कि-तू गंगाजी पर जाकर राजा का जप कर और ये ले धोती, अंगोछा, पंचपात्र, माला और गोमुखी।" वह लेके गंगा पर गया। वहाँ स्नान कर माला लेके जप करने बैठा। विचारा कि जो दानाध्यक्ष ने कहा था वही मन्त्र है। ऐसा वह मूर्ख समझ गया। **'सरक माला खटक मणका, मैं राजा का जप करूँ, मैं राजा का जप करूँ, मैं राजा का जप करूँ'** जपने लगा।

तब किसी दूसरे मूर्ख ने विचारा कि जब उसका लग गया है, तो मेरा भी लग जायगा, चलो। वह गया, वैसा ही हुआ। चलते समय दानाध्यक्ष बोला कि 'तू जा, जैसा वह करता है वैसा ही करना।' वह गया, वैसे ही आसन पर बैठकर पढ़ने वाले का मन्त्र सुनकर जपने लगा कि-**"तू करे सो मैं करूँ, तू करे सो मैं करूँ"।**

वैसे ही तीसरा कोई धूर्त जाके सब कुछ कर करा लाया। चलते समय दानाध्यक्ष ने कहा कि-'जब तक निर्वाह होता दीखे, तब तक करना'। वह भी इसी अभिप्राय को मन्त्र समझके वहाँ जाकर जप करने को बैठके जपने लगा कि-**"ऐसा निभेगा कब तक, ऐसा निभेगा कब तक'।**

वैसे ही चौथा कोई मूर्ख सब प्रबन्ध कर-करा के गंगा पर जाने लगा, तब दानाध्यक्ष ने कहा कि-'जब तक निभे तब तक निर्वाह करना।' वह भी इसको मन्त्र ही समझके गंगा पर जाके जप करने को बैठके उन तीनों का मन्त्र सुना। तो एक कहता है- **"मैं राजा का जप करूँ, मैं राजा का जप करूँ",मैं राजा का जप करूँ'**। दूसरा-**तू करे सो मैं करूँ, तू करे सो मैं करूँ",तू करे सो मैं करूँ'**। तीसरा-**"ऐसा निभेगा कब तक, ऐसा निभेगा कब तक, ऐसा निभेगा कब तक'**। और चौथा जपने लगा कि **जब तक निभे तब तक, जब तक निभे तब तक"।**

ध्यान रक्खो कि सब अधर्मी और स्वार्थी लोगों की लीला ऐसी ही हुआ करती है कि अपने मतलब के लिये अनेक अन्यायरूप कर्म करके अन्य मनुष्यों को ठग लेते हैं। अभाग्य है ऐसे मनुष्यों का कि जिनके आत्मा अविद्या और अधर्मान्धकार में गिरके कदापि सुख को प्राप्त नहीं होते।

[धार्मिक विद्वान् राजा का दृष्टान्त]

यहाँ किसी एक धार्मिक राजा का दृष्टान्त सुनो। कोई एक विद्वान् धर्मात्मा राजा था। उसके दानाध्यक्ष के पास किसी धूर्त ने जाकर कहा कि मेरी जीविका करादो। **दानाध्यक्ष**-तुमने कौन-सा शास्त्र पढ़ा और क्या-क्या काम करते हो? **अर्थी**-मैं कुछ भी नहीं भी न पढ़ा। और बीस वर्ष तक खेलता-कूदता गाय-भैंस चराता, खेतों में डोलता और माता-पिता के सामने आनन्द करता था। अब सब घर का बोझ [मुझ पर] पड़ गया है। आपके पास आया हूँ, कुछ करा दीजिये।

दानाध्यक्ष-नौकरी चाकरी करो तो करा देंगे। **अर्थी**-मैं ब्राह्मण साधु और जहाँ-तहाँ बाजारों में उपदेश करनेवाला हूँ। मुझ से ऐसा परिश्रम कहाँ बन सकता है? **दानाध्यक्ष**-तू विद्या के बिना ब्राह्मण, परोपकार के बिना साधु, और विज्ञान के बिना उपदेश कैसे कर सकता होगा? इसलिए नौकरी-चाकरी करना हो तो कर, नहीं तो चला जा।

वह मूर्ख वहाँ से निराश होकर चला कि यहाँ मेरी दाल न गलेगी, चलो राजा से कहें। जब राजा के पास आके वैसे ही कहा, तब राजा ने वैसा ही जबाव दिया कि जैसा दानाध्यक्ष जी ने कहा है, वैसा करना हो तो कर, नहीं चला जा। वह वहाँ से चला गया।

इसके पश्चात् एक योग्य विद्वान् ने आके दानाध्यक्ष से मिलके बातचीत की, तो दानाध्यक्ष ने समझ लिया कि यह बहुत अच्छा सुपात्र विद्वान् है। जाके राजा से मिल के कहा-'पण्डित जी से आप भी कुछ बातचीत कीजिए। वैसा ही किया। तब राजा ने परीक्षा करके यह अतिश्रेष्ठ विद्वान् है। ऐसा जानकर उनसे कहा कि आपको हजार रुपये मासिक मिलेगा। आप सदा हमारी पाठशाला में विद्यार्थियों को पढ़ाया और धर्मोपदेश दिया कीजिए वैसा ही हुआ।

धन्य ऐसे राजा और दानाध्यक्षादि हैं जिनके हृदय में विद्या परमात्मा और धर्मरूप सूर्य प्रकाशित होता है।

प्ति से युक्त होकर, अपनी प्रजा को कराकर, आनन्दित रहता और सब को सुख से युक्त कराता है, वह **'राजा'** कहाता है।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका

पर जाएं।

13 नवम्बर–12 दिसम्बर 2019 **मार्गशीर्ष** ऋतु– हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		कृतिका कृष्ण प्रतिपदा 13 नवम्बर	रोहिणी कृष्ण द्वितीया 14 नवम्बर	मृगशिरा कृष्ण तृतीया 15 नवम्बर	आर्द्रा कृष्ण चतुर्थी 16 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण पंचमी 17 नवम्बर
पुष्य कृष्ण षष्ठी 18 नवम्बर	आश्लेषा कृष्ण सप्तमी 19 नवम्बर	मघा कृष्ण अष्टमी 20 नवम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण नवमी 21 नवम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण दशमी/एकादशी 22 नवम्बर	हस्त कृष्ण द्वादशी 23 नवम्बर	चित्रा कृष्ण त्रयोदशी 24 नवम्बर
स्वाती कृष्ण चतुर्दशी 25 नवम्बर	विशाखा कृष्ण अमावस्या 26 नवम्बर	अनुराधा कृष्ण प्रतिपदा 27 नवम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल द्वितीया 28 नवम्बर	मूल शुक्ल तृतीया 29 नवम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 30 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल पंचमी 1 दिसम्बर
श्रवण शुक्ल षष्ठी 2 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल सप्तमी 3 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल अष्टमी 4 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल नवमी 5 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल दशमी 6 दिसम्बर	रेवती शुक्ल एकादशी 7 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल एकादशी 8 दिसम्बर
भरणी शुक्ल द्वादशी 9 दिसम्बर	कृतिका शुक्ल त्रयोदशी 10 दिसम्बर	रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 11 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल पूर्णिमा 12 दिसम्बर			

13 दिसम्बर–10 जनवरी–2020 **पौष** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस 19 दिसम्बर		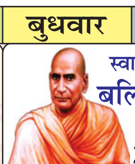 स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर		आर्द्रा प्रतिपदा 13 दिसम्बर	पुनर्वसु कृष्ण द्वितीया 14 दिसम्बर	पुष्य कृष्ण तृतीया/चतुर्थी 15 दिसम्बर
आश्लेषा कृष्ण पंचमी 16 दिसम्बर	मघा कृष्ण षष्ठी 17 दिसम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण सप्तमी 18 दिसम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 19 दिसम्बर	हस्त कृष्ण नवमी 20 दिसम्बर	चित्रा कृष्ण दशमी 21 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण एकादशी 22 दिसम्बर
विशाखा कृष्ण द्वादशी 23 दिसम्बर	अनुराधा कृष्ण त्रयोदशी 24 दिसम्बर	ज्येष्ठा कृष्ण चतुर्दशी 25 दिसम्बर	मूल कृष्ण अमावस्या 26 दिसम्बर	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल प्रतिपदा 27 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल द्वितीया 28 दिसम्बर	श्रवण शुक्ल तृतीया 29 दिसम्बर
धनिष्ठा शुक्ल चतुर्थी 30 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल पंचमी 31 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल षष्ठी 1 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल सप्तमी 2 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल अष्टमी 3 जनवरी	रेवती शुक्ल नवमी 4 जनवरी	अश्विनी शुक्ल दशमी 5 जनवरी
भरणी शुक्ल एकादशी 6 जनवरी	कृतिका शुक्ल द्वादशी 7 जनवरी	रोहिणी शुक्ल त्रयोदशी 8 जनवरी	मृगशिरा शुक्ल चतुर्दशी 9 जनवरी	आर्द्रा शुक्ल पूर्णिमा 10 जनवरी		

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

It was at Udaipur that Swamiji established the Parooakarini Sabha (Society for Benevolence) and drew up his will which was signed by many chiefs of the Udaipur court. This will had fourteen articles which dealt with the manner in which his property consisting of books, a printing press, and some money given to him by donors, was to be disposed of. The establishment of this Sabha indicates that Swamiji had premonition of his approaching death. This is borne out by Col. Olcott who states that Swamiji repeatedly told him at meerut that he would never see 1884. The Sabha was to consist of 23 members with Maharaja Sajjan singh. Rular of Mewar, as president, Raj Mul Raj, President, Arya Samaj Lahore, as its vice-president, and included Maharaja of Shahpura, Mahadeva Govind Ranade, and Raja Jai Kishan das, C.S.I., of Moradabad. It was to employ the said property in work of public utility.

When Swamiji was about to leave Udaipur, His Highness present him with an address written with his own hands wherein he said, "your stay here for eight months has been a matter of great delight to me. I can never reply the debt I owe to you for the instruction I have receiving at your hands. I would request you to stay here longer, but I cannot arrogate to myself the privilege of monopolising you-a great teacher intended to do good to humanity. I, however, hope that you will came again and make me happy.

The Swami reached Shahpur on 9 the march 1883, and was received by the officials of the Durbar with great respect. On the very day of Swamiji's arrival, the Raja called on him with some chiefs of the state. It was arranged that His Highness would spend three hours daily with Swamiji, two for the study of Shastras and one for general conversation. Following this plan, the Raja went through the Manusmriti, the Yog-sutras, and a portion of the Vaisheshika (one of the six thoughts of vedic philosophy).

After staying at Shahpura for two months and s half, Swamiji made up his mind to go to Jodhpur, At the moment of parting the Raja presented him with an address wherein he said that he had hoped Swamiji would stay longer to satisfy his spiritual thirst but he could not insist on his stay at the cost of thousands of others whom his personality was likely to benefit. He hoped, however, that Swamiji would repeat his visit to the state and thereby confer on them a boon to which he and his people would eagerly forward.

"The Rajas of states love to surround themselves with all sorts of means for sensual enjoyments. Please take good care to be a little mild and tactful in your denunciations in the State you are going to" said Raja Nahir Singh of Shahpura to Swamiji when the latter was on the point of staring for Jodhpur. To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

पाखण्डवाद से सम्पूर्ण विश्व पतन की ओर जा रहा है, इस अन्धकार को दूर कर अर्थात् वेदों के मार्ग पर चलकर ही सम्पूर्ण विश्व के प्राणी सुखी रह सकते हैं। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' । स्वयं पर विश्वास कर पुरुषार्थ कर हम अपने देश को समृद्धशाली बना सकते हैं। यज्ञ-संध्या से वातावरण शुद्ध करना हमारा मुख्य लक्ष्य है। आज धर्म के नाम पर पाखण्डी सच्चे ज्ञान को दूर कर रहे हैं, इसके भेद को वेदों से जाना। आर्य समाज सबका समाज है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों के ताले तोड़े, इस पर हमें गर्व है। आर्य प्रशिक्षण शिविर में एक नवीन ज्ञान हमें प्राप्त हुआ। इस महान कार्य में सदैव लगे रहेगें।

नाम : हरिराम आर्य, आयु : 23 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः योग शिक्षक, पता : जैसपुरी, छत्तीसगढ़।

मैं सत्र करने से पहले अपने मार्ग से भटका हुआ था। सत्र से पहले मुझे अपने और अपने राष्ट्र का कोई अनुभव नहीं था। सत्र करने के बाद मुझे अपने वेदों का ज्ञान प्राप्त हुआ तथा हमारे पूर्वजों के बारे में उनके त्याग का पता चला। मैंने अपने पूर्वजों का अनुसरण करने का संकल्प लिया है।

नाम : गौरव कुमार, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्यः व्यापार, पता : सदाफल, बिजनौर ।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित द्विदिवसीय लघु गुरुकुल में दिनांक 23 नवम्बर 2019 से 24 नवम्बर 2019 को हमें आर्य क्या है? तथा धर्म क्या है? इसके बारे में हमें श्री आचार्य हनुमत् प्रसाद जी ने जीवन के बारे में बहुत ही अच्छे से अनुभव करा दिया, जो हमें बहुत अच्छा लगा। मुझे यहाँ आकर पता चला कि हम जी तो रहे थे जीवन, लेकिन यह जीवन पूरा निरर्थक था। अब मैं हर सत्र में आना चाहती हूँ।

हम अपने विद्यालय ज्ञान गंगा संस्कृत विद्यालय में पहले भी कोशिश करते आ रहे है, अब यहाँ आने से हमारी कोशिश और ज्यादा रहेगी कि हम अपने विद्यालय के बच्चों को और अच्छे से आर्य बनाये।

नाम : रोशनी, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : एम.कॉम, कार्यः सह-शिक्षिका, पता : चम्पा, छत्तीसगढ़।

मुझे इस सत्र में आकर बहुत अच्छा ज्ञान मिला और मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ कि मैं कौन हूँ तथा मेरा अस्तित्व क्या है? तथा मुझे अपने पूवजों की जानकारी प्राप्त हुई तथा मुझे अंधविश्वास एवं पाखण्ड से मुक्ति का ज्ञान प्राप्त हुआ। मैंने इस सत्र में आकर नशा मुक्ति का संकल्प लिया है।

नाम : अंकुर कुमार, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : कृषि, पता : बिजनौर

इस सत्र का मेरा अनुभव मेरी उम्मीद से बहुत ही अच्छा रहा। मैंने महर्षि जी के साहित्यों से प्रेरित होकर इस सत्र में शामिल होने का निर्णय लिया था। सोशियल मीडिया पर एक्टिव विभिन्न आर्य विद्वानों एवं प्रचारकों के द्वारा जानकारी और ज्ञान भी लिया है, मैंने इस सत्र में मुख्य प्रवक्ता पं. उपाध्याय जी द्वारा दिये गये वक्तव्य से जो ज्ञान मिला वह बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा, मुझे ऐसी उम्मीद है। धन्यवाद!

मैं आदिवासी बाहुल सरगुण जिले का निवासी हूँ। जहाँ की मुख्य समस्या हिन्दू लोगों का अन्य, मत-मजहब-समप्रदाय में परिवर्तन है। जो कि हमारे राष्ट्र के लिए समस्या है। मैं आर्य समाज से जुड़कर धर्म परिवर्तन के अनैतिक कार्य को रोकना चाहता हूँ।

नाम : राधेश्याम गुप्ता, आयु : 29 वर्ष, योग्यता : बी.कॉम, बी. एड., कार्यः व्यापार, पता : अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़।

इस सत्र में आने से मुझे बहुत कुछ अनुभव हुआ। मुझे पहले थोड़ा लगता था कि भगवान होते है, उनकी प्रतिमा भी होनी चाहिए, पूजा भी करनी चाहिए, लेकिन सब की सच्चाई यहाँ आकर मुझे पता चला, इसके लिए मैं आर्य समाज का बहुत ही आभारी रहूँगा।

साथ ही साथ अपने राष्ट्र के लिए हमेशा तैयार रहूँगा। किसी भी परिस्थिति में राष्ट्र के हित में ही कार्य करूँगा। अभी से मेरा जीवन शुरु होता है आर्य के साथ। और अब मैं भी आर्य हूँ। धन्यवाद! आर्य समाज।

नाम : राजकुमार यादव, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्यः नौकरी, पता : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

मुझे सत्र में रहकर बहुत अच्छा ज्ञान मिला और मुझे मालूम हुआ कि मेरा अस्तित्व क्या है? मैं कौन हूँ? तथा अपने पूर्वजों की जानकारी प्राप्त की। धर्म क्या है? यह भी मालूम हुआ तथा आज मुझे अंधविश्वास, पाखण्डवाद से मुक्ति मिली। तथा सत्र में रहकर वह ज्ञान हुआ, हम ही वो व्यक्ति हैं जो इस राष्ट्र की सुरक्षा तथा सुधार करते आये हैं। भविष्य में वेदों के सिद्धान्तों पर चलकर राष्ट्र की भविष्य में रक्षा करते रहेंगे।

नाम : सौरभ आर्य, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : एल.एल.बी., कार्यः नौकरी, पता : बिजनौर।

यहाँ आर्य समाज के बारे में मुझे समझाया गया। वह बहुत अच्छा एवं धर्म से बिछड़ें हुए लोगों को मूल धारा में लाने की यह प्रेरणा दी गई। इस से यह पता चला की हम लोग अपने धर्म से बिछुड़े हुऐ हैं। ये अब हम लोगों की अपने देश के प्रति अपना क्या है उसके बारे में समझाया गया और मुख्य धारा में आने कि प्रेरणा दी गई।

आर्य समाज के निर्माण के लिए हम अपने समाज में प्रेरित करेंगे एवं इनकी महत्त्वता को बताएंगे।

नाम : अमित आर्य, आयु : 36 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्यः कृषि, पता : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	12 दिसम्बर	दिन-गुरुवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-मृगशिरा
अमावस्या	26 दिसम्बर	दिन-गुरुवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मूल
पूर्णिमा	10 जनवरी	दिन-शुक्रवार	मास-पौष	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आर्द्रा
अमावस्या	24 जनवरी	दिन-शुक्रवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा

ओम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

सूचना

आर्य प्रचारक कक्षा

05 जनवरी 2020 से 12 जनवरी 2020

आर्य प्रचारक का पूरा पाठ्यक्रम एक साथ

स्थान:-

आचार्य गुरुकुल महाविद्यालय

चित्तौड़ा झाल, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश-251314

अर्हता एवं निर्देश

1. अभ्यर्थी ने एकाधिक बार द्विदिवसीय आर्य निर्माण सत्र किया हो, साथ ही उसका स्वाध्यायशील होना अवश्यक है।
2. अपने जनपद के अधिकारी (राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा) या आवर्त्त आचार्य की संस्तुति आवश्यक है।
3. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय में भी व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर पंजीकरण फार्म भर सकते हैं।
4. पंजीकरण के लिये www.aryanirmatrisabha.com पर जाकर प्रचारक कक्षा के नीचे लिखे Register पर क्लिक करके फार्म भरें
5. स्थान पूर्ण होने की दशा में आगामी कक्षा तक प्रतीक्षा करनी होगी।
6. चार जनवरी को सायंकाल अथवा पांच जनवरी को प्रात: 9 बजे तक पहुचना अनिवार्य है।
7. आर्य गुरुकुल महाविद्यालय के खाता संख्या 2313000100694407 (IFSC Code PUNB0231300) में शुल्क 500 रूपये जमा करा कर रशीद साथ लायें।
8. कक्षा में पूर्ण अवधि परिधान कटिवस्त्र उत्तरीय ही होगा।

प्रवेश सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिये निम्न आचार्यों से सम्पर्क करें-

आचार्य धर्मपाल जी	आचार्य महेश जी	आचार्य संजीव जी	आचार्य सतीश जी
9812905265	9813377510	9045353309	9350945482

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।